राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा

वर्ष 14 अंक **1जनवरी–जून 2012**

1.''भारत में नवमध्यम वर्गों का उद्‌भव एवं सामाजिक रूपान्तरण : राजस्थान के विशेष संदर्भ में''–प्रोफेसर सी.एल. शर्मा, सेवानिवृत आचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, (राज.)

भारतीय समाज अनेक जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों, भाषायी समूहों एवं सांस्कृतिक क्षेत्रीय पहचानों में विभक्त होते हुए भी सामाजिक एकता का परिचायक है। इस एकता की धुरी है नव मध्यम वर्ग। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत भारत में जाति–वर्ग गठजोड़ की व्याख्या करते हुए समसामयिक भारतीय सामाजिक व्यवस्था में नव मध्यम वर्गों के आविर्भाव एवं उनकी स्थिति का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ–साथ राजस्थान में उभरे नव मध्यम वर्गों के द्वारा जनित सामाजिक रूपान्तरण की विवेचना करते हुए इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि नव मध्यम वर्गों से ही लोकतांत्रिक राजनीतिकरण की प्रक्रिया सुदृढ़ होती दिखाई देती है। संक्षेप में प्रस्तुत आलेख भारत में नव मध्यम वर्गों के उद्‌भव एवं सामाजिक रूपान्तरण में उनके योगदान को उजागर करने के प्रयास पर आधारित है।

2.''लेवी स्थ्रॉस का विवाह विनिमय सिद्धान्त''–प्रोफेसर ए0आर0एन0 श्रीवास्तव,अवकाश प्राप्त प्रोफेसर मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ.प्र.), मिताश्री श्रीवास्तव, शोध अध्येत्री, मानव विज्ञान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ.प्र.)

फ्रांसिसी मानव शास्त्री लेवी स्थ्रॉस विश्वस्तरीय विद्वान माने जाते हैं। उन्हें आधुनिक मानव विज्ञान का जनक कहा जाता है। इनके नाम के साथ 'संरचनावाद' की अवधारणा जुड़ी हुई है। इनके जीवनकाल में और मरणोपरान्त 'संरचनावाद' को समझने–समझाने की परम्परा जारी है। इस लेख में सरल शब्दों में उदाहरणों के साथ संरचनावाद को समझाने का प्रयास किया गया है।

3.''पूर्वोत्तर भारत और वैष्णव धर्म : एक नृ–ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण ''–डॉ. आनन्द प्रकाश सारस्वत, प्राचार्य, आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुसावर (राजस्थान)

हिन्दू धर्म के अंतर्गत वैष्णव मत यद्यपि एक सम्प्रदाय के रूप में उपस्थित है लेकिन पूर्वोत्तर भारत की बोलचाल की भाषा और लेखन में इसे 'वैष्णव धर्म' कहा और लिखा जाता है। इसलिए लेख के अंतर्गत 'वैष्णव धर्म' ही कहा गया है। प्रत्यक्ष रूप से इसका तात्पर्य हिन्दू धर्म के उस सात्विक रूप से है जो आसाम में 11वीं शताब्दी में गौरांग महाप्रभु (चैतन्य महाप्रभु) के कृष्ण भक्ति आन्दोलन के फैलने से वहां की जातियों में फैला। जिस संदर्भ में आज पूर्वोत्तर भारत में और विशेषकर मैतेई लोगों में वैष्णव धर्म फैला उसे अनेक दृष्टिकोणों से देखना आवश्यक प्रतीत होता है कि वैष्णव धर्म किस बदले रूप में वहां स्थापित हुआ है, इतिहास का इसमें क्या योगदान रहा है, पूर्वोत्तर भारत की जनसंख्या की प्रजातिगत संरचना ने इसे किस रूप में प्रभावित किया है तथा बंगाल से जुड़ा होने के कारण इस पर बंगाली संस्कृति का क्या प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार पूर्वोत्तर भारत में फैला वैष्णव धर्म एक नृ–ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय विश्लेषण का विषय बन गया है। प्रस्तुत लेख इसी दिशा में एक प्रयास रहा है।

4.''एकल परिवारों के किशोरों में आत्मविश्वास का अध्ययन ''—डॉ मधु नयाल,एसोसिएट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, एस0एस0जे0 परिसर अल्मोड़ा(उत्तराखण्ड)

प्रस्तुत अध्ययन कुमाऊँ क्षेत्र के किशोरों पर आत्मविश्वास का मापन करने हेतु किया गया है। इस हेतु बाध्य एकल परिवारों एवं एकल परिवारों के क्रमशः 29 व 30 किशोरों को लिया गया है। जिनकी आयु 13से 19 वर्ष है, आत्मविश्वास के मापन हेतु जुयाल तथा तलनिया (1990) द्वारा निर्मित आत्मविश्वास मापनी प्रशासित करवाई गई। दोनों समूहों में अन्तर के मापन हेतु टी—परीक्षण प्रयुक्त किया गया। जिसमें बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि बाध्य एकल परिवारों एवं एकल परिवारों के किशोरों में आत्मविश्वास के स्तर में .05 स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

5.'' ग्रामीण भारत में स्त्री शिक्षा और आधुनिकीकरण ''—डा0 मनोज कुमार छापड़िया,असिस्टेन्ट प्रोफेसर—समाजशास्त्र, कामता प्रसाद सुन्दर लाल स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या—फैजाबाद (उ.प्र.)

मानवीय संसाधनों के पूर्ण विकास, बच्चों के चरित्र निर्माण व देश के बहुमुखी विकास के लिए स्त्री शिक्षा पुरूषों की शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण व उपयोगी है। वर्तमान परिदृश्य में जहां शिक्षा ने महिलाओं को उनके अस्तित्व का बोध कराया वहीं दूसरी ओर पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, नगरीकरण, सूचना एवं संचार क्रान्ति ने स्त्रियों की परम्परागत प्रस्थिति को प्रभावित किया है। शिक्षा ने आज स्त्रियों के कार्यों एवं भूमिकाओं को परिवर्तित किया है जिससे उनमें सामाजिक गतिशीलता दृष्टिगोचर हो रही है। प्रस्तुत अध्ययन में यह देखने का प्रयास किया गया है कि स्त्रियों के शिक्षित होने पर क्या गतिशीलता आती है और क्या शिक्षित महिलाएं स्वतंत्रता, वैयक्तिक्ता, गोपनीयता आदि आधुनिक तत्वों को अपनाती हैं अथवा गतिशीलता में पुरूष बाधक हैं।

6.''इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रयोग एवं प्रभाव : शिक्षित युवजनों के संदर्भ में ''—श्वेता श्रीवास्तव,शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र, फिऱोज गाँधी कॉलेज, रायबरेली (उ.प्र.), डॉ. यू.बी.सिंह, अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, फिऱोज गाँधी कॉलेज, रायबरेली (उ.प्र.) डॉ. यू.बी.सिंह

भारतीय समाज में आधुनिकीकरण पाश्चात्यीकरण, नवीन प्रौद्योगिकी आदि के फलस्वरूप अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं जिनसे व्यक्ति और समाज की सोच में काफी परिवर्तन आया है विशेषतः युवजनों के विचारों, व्यवहारों, रूचियों, आदतों एवं दृष्टिकोणों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे जा रहे हैं जो पुरानी पीढ़ी से सर्वथा भिन्न दिखाई देते हैं। प्रस्तुत लेख आधुनिक यंत्रों—उपकरणों के परिणामस्वरूप महाविद्यालयी छात्र—छात्राओं के परिवर्ती विचारों एवं व्यवहारों को जानने का एक प्रयास है।

7.'' लिंगदोह समिति की संस्तुतियां एवं छात्र—संघ ''—डॉ. हरि प्रकाश श्रीवास्तव,उपाचार्य समाजशास्त्र, लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोण्डा (उ.प्र.)

उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्र संघों के गठन के संबंध में न केवल सामान्य जन अपितु बुद्धिजीवियों प्रशासकों में भी दो प्रकार के विचार पाये जाते हैं। एक ओर कुछ लोग इन्हें राजनीतिक क्षेत्र में सफलता हेतु आवश्यक मानते हैं तो दूसरी ओर अन्य लोग इन्हें व्याधिकीय मानते हैं। छात्र संघों के गठन के औचित्य पर विचार करने हेतु माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भारत के पूर्व निर्वाचन आयुक्त श्री जे.एम. लिंगदोह की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय जांच समिति गठित करके उसकी संस्तुति चाही थी। इस समिति की संस्तुतियों के संदर्भ में किए गए प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि इन संस्तुतियों में से कुछेक शिक्षण संस्थाओं में पहले से ही प्रचलित थीं तथा कुछ वर्तमान परिस्थितियों में अत्यधिक अव्यवहारिक प्रतीत होती हैं।

8.'' माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण अभिक्षमता(जनपद चमोली के दुर्गम क्षेत्रों के संदर्भ में) ''– विनोद चन्द,शोध अध्येता, शिक्षाशास्त्र, मानव भारती विश्वविद्यालय, सोलन, (हिमाचल प्रदेश), डा0बी0सी0शाह,असिस्टेंट प्रोफेसर, बी0एड0, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर, चमोली (उत्तराखण्ड)

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है और शिक्षक इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी शिक्षक की निपुणता का आकलन उसकी शिक्षण अभिक्षमता से लगाया जा सकता है। शिक्षक की शिक्षण अभिक्षमता उसके शिक्षण कार्य को प्रभावित करती है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत जनपद चमोली के दुर्गम क्षेत्रों में कार्यरत माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

9.'' भारतीय राष्ट्रवाद पर इंग्लैण्ड का प्रभाव और चुनौतियाँ ''–डॉ. श्यामा रॉय, प्राचार्या, रमेश झा महिला महाविद्यालय, सहरसा (बिहार)

भारत को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में प्रभावित कराने वाली पश्चिम जगत की प्रवृत्तियों में राष्ट्रवाद का सिद्धांत प्रमुख है। यूरोप को आधुनिक युग में प्रवेश करने वाली पुनर्जागरण, भौगोलिक खोजों, जहाजरानी में क्रान्तिकारी परिवर्तन, प्रबुद्ध राजतंत्रों द्वारा सामान्तवाद के दमन ने राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभायी। यूरोप ने इंग्लैण्ड के नेतृत्व में औपनिवेशिक नीति के माध्यम से अपनी आधुनिक युग की औद्योगिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने का प्रयास किया। औपनिवेशीकरण का शिकार भारत पश्चिम की इन चुनौतियों को स्वतंत्रता प्राप्त कर मुकाबला करने में सफल रहा। किन्तु आधुनिक युग की चुनौतियों का सफलतापूर्वक समाधान मानवीय राष्ट्रवाद को अपनाकर सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में अपने शासनतंत्र को संवेदनशील और तीव्र परिणाम उन्मुख करके किया जाना चाहिए।

10.''पलायन कारण एवं परिणाम(उत्तराखण्ड के विशेष संदर्भ में)''–डा0 इला साह,एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, कुमायूँ विश्वविद्यालय एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

उत्तराखण्ड में बढ़ता पलायन एक गंभीर समस्या है। पलायन आज यहां एक सामाजिक संस्कार बन चुका है। पहाड़ के पलायन का सीधा संबंध यहां के गांवों के कमजोर उत्पादन तंत्र से जुड़ा है। संसाधनों की दृष्टि से समृद्ध होने के बावजूद पहाड़ से पलायन जारी है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत पहाड़ के पलायन के कारणों एवं परिणामों को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

11.''विकास एवं राष्ट्रीय सामाजिक एकता''–डॉ.एस.एस.भदौरिया, सेवा निवृत्त प्रोफसर एवं अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, शासकीय एम.एल.बी. कालेज, गवालियर (म.प्र.) एवं नेशनल सीनियर फैलो, आई.सी.एस. एस.आर., नई दिल्ली।

सांप्रत भारत में हमें राष्ट्र और समाज के हित को सर्वोपरि मानकर संकीर्ण राजनीति, धर्म, जाति, भाषा क्षेत्र आदि से संबंधित संकुचित निष्ठाओं को त्यागकर इनमें ऐसा समन्वय स्थापित करने पर विचार करना चाहिए कि आज की परिस्थिति के अनुरूप इनकी व्याख्या नियोजन और विकास के अनुरूप हो। नियोजन जनतंत्रीकरण, स्वदेशी और आधुनिकीकरण आज की आवश्यकता है। इनसे विमुख रहकर राजनीतिक और सामाजिक एकता स्थापित नहीं की जा सकती। प्रस्तुत लेख इसी विचार को प्रकाशित करने का एक प्रयास है।

12.'' बिजनौर जनपद में ग्रामीण स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की भूमिका ''–डा0 सुनीता आर्या,असिस्टेंट प्रोफेसर गृह विज्ञान, आर.बी.डी. महिला महाविद्यालय, बिजनौर (उ.प्र.)

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा के मुख्य केन्द्र हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का तात्पर्य ऐसी संस्था से है जो एक परिभाषित भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए व्यापक उपचारात्मक, निरोधात्मक तथा प्रोत्साहक सेवाएं प्रदान करता है। भारत में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना और समिति–1946 की संस्तुतियों के पश्चात हुई है। प्रस्तुत अध्ययन बिजनौर जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य स्तर तथा उसके सुधार की समस्या के प्रस्तुतीकरण का एक प्रयास रहा है।

13.'' लैंगिक असमानता : कन्या भ्रूण हत्या के विशेष परिप्रेक्ष्य में ''–डा0 अनीता देवी अग्रवाल, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.), प्रीति सक्सेना , शोध अध्येत्री, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ.प्र.)

वर्तमान समय में महिलायें कोख से कब्र तक हिंसा एवं भेदभाव की शिकार हो रही हैं जो स्वस्थ समाज के निर्माण में बहुत बड़ी बाधा है। देश में 2001 की जनगणना के अनुसार बाल लिंग अनुपात 1000:927 था जो 2011 में घटकर मात्र 1000:914 रह गया जिससे यह प्रमाणित होता है कि गर्भ में लड़कियों की हत्या के मामलों ने सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत कन्या भ्रूण हत्या के विशेष संदर्भ में भारत में लैंगिक असमानता की समस्या की विकरालता को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

14.'' ग्रामीण महिलाऐं : स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति असंवेदनशील(उत्तराखण्ड के परिप्रेक्ष्य में)''– डा0 कामना जैन, असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग, एस.एस.डी.पी.सी. कालेज, रूड़की (उत्तराखण्ड)

प्रायः देखा जाता है कि नगरीय क्षेत्रों में निवास करने वाले स्त्री–पुरूष तो अपने अधिकारों, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के प्रति सचेत होते हैं किन्तु ग्रामीण समाज अभी भी अपनी प्राचीन परंपराओं, रीतियों–नीतियों से प्रभावित हैं। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत ग्रामीण महिलाओं की स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति असंवेदनशीलता को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

15.'' महात्मा गॉधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजनाएक समाजशास्त्रीय अध्ययन ''–प्रीती द्विवेदी,असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, महिला महाविद्यालय, कानपुर (उ.प्र.)

25 अगस्त 2005 को संसद द्वारा 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम' को कानून के रूप में पारित किया गया था, जिसका उद्देश्य देश में बेरोजगारी व भुखमरी को दूर करना था। योजना के रूप में इसे 2 फरवरी 2006 से आंध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले से प्रारम्भ किया गया। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत 'मनरेगा' द्वारा रोजगार प्राप्त किये हुए लोगों के सामाजिक–आर्थिक स्तर में आए परिवर्तन का अध्ययन करना रहा है।

16.'' मध्यप्रदेश में गरीबी की स्थिति–एक विश्लेषण ''–डॉ. अनुराग सिंह राव,सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शासकीय महाविद्यालय, राऊ, इन्दौर (म.प्र.)

देश की सर्वाधिक प्रमुख समस्या विभिन्न राज्यों में व्याप्त निर्धनता है क्योंकि निर्धनता के कारण ही देश का वास्तविक एवं संपूर्ण विकास नहीं हो पा रहा है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत यह प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है कि देश में निर्धनता की स्थिति क्या रही है, विभिन्न वर्षों में विभिन्न राज्यों में निर्धनता का प्रतिशत क्या रहा है तथा विशेष रूप से मध्य प्रदेश राज्य के अंतर्गत वे कौन से क्षेत्र हैं जो निर्धनता से तुलनात्मक रूप से अधिक प्रभावित हैं।

17.'' पर्यावरण असंतुलन और मानवीय जीवन ''–डॉ. अमित कुमार दुबे,पोस्ट डॉक्टरल फैलो, आई.सी. एस.एस.आर., मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, डॉ. अशोक शर्मा, सहा. प्राध्यापक समाजशास्त्र, एस.एल.पी. शासकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

जीव मंडल के घटकों में विभिन्न अवयवों का एक निश्चित अनुपात है। प्रकृति में प्रत्येक पदार्थ, जीव–जन्तु एवं वनस्पति का अपना एक अस्तित्व एवं प्रयोजन होता है। प्रकृति अपने समस्त घटकों में संतुलन बनाये रखती है। किन्तु प्रकृति के इन घटकों में असंतुलन के कारण मानव जीवन पर भयंकर विनाशकारी प्रभाव पड़ रहे हैं। प्रस्तुत लेख मानव जीवन के लिए पर्यावरणीय असंतुलन की भयावहता को उजागर करने का एक प्रयास कहा जा सकता है।

18.'' बाल अपराध पर जन संचार माध्यमों का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''–राकेश कुमार तिवारी,शोध अध्येता, समाजशास्त्र विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ.प्र.), श्रीराम यादव, शोध–अध्येता, समाजशास्त्र विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ.प्र.)

सांप्रत समाज में संचार माध्यम हमारे दैनिक जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं। ऐसा देखा गया है कि बच्चे सप्ताह में लगभग 35–55 घंटे अलग–अलग स्वरूपों में संचार माध्यमों से जुड़े हुए हैं। अतः बच्चों के विकास पर संचार माध्यमों के प्रभाव की उपेक्षा नहीं की जा सकती। प्रस्तुत आलेख बाल अपराधियों पर जनसंचार माध्यमों के विभिन्न स्वरूपों के प्रभाव का एक समाजशास्त्रीय प्रयास रहा है।

19.'' भील जनजाति पर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का प्रभाव''–विकास वर्मा,शोध अध्येता, अर्थशास्त्र अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर (म.प्र.), पवन जायसवाल, हायक प्राध्यापक, रेणुका प्रबन्धन–संस्थान सेन्धवा, बड़वानी (म.प्र.)

देश में गरीबी एवं भुखमरी दूर करने, पोषण का स्तर सुधारने तथा असमानता को कम करने की दिशा में सरकार द्वारा 2005 में 'राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम' (नरेगा) पास करके 2006 से इसे प्रारंभ किया गया। 2009 में गाँधी जयंती के अवसर पर देश की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण योजना का नाम बदलकर महात्मा गाँधीके नाम पर 'मनरेगा' कर दिया गया। मनरेगा मात्र कोई कार्यक्रम नहीं प्रत्युत एक अधिनियम है जो गरीबी की रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वाले परिवारों को रोजगार प्राप्त करने का एक वैधानिक अधिकार प्रदान करता है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत मध्य प्रदेश के अलिराज जनपद के अंतर्गत 'भील' जनजाति पर मनरेगा के प्रभाव का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

20.'' नवपाषाणयुगीन स्थल बुर्जहोम : एक अध्ययन ''–पवन शेखर,शोध अध्येता, नेट., जे.आर.एफ., तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)

विभिन्न समयों पर किए गए उत्खननों द्वारा काश्मीर परिक्षेत्र में प्राग्ऐतिहासिक काल की नवपाषाणीय संस्कृति की विशेषता वाले विभिन्न उपकरण एवं वस्तुएँ प्राप्त हुईं, जिससे भारतीय पाषाणिक संस्कृति में एक नवीन अध्याय जुड़ा। इस दृष्टि से बुर्जहोम एक अशितय महत्वपूर्ण स्थल है। प्रस्तुत आलेख नवपाषाणकालीन स्थल बुर्जहोम के पुरातात्विक विश्लेषण का एक प्रयास है।

21.'' दलितोत्थान में गाँधी व अम्बेडकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन ''–नितिन कुमार गंगवार,शोध अध्येता, राजनीति विज्ञान, बरेली कॉलेज बरेली (उ.प्र.)

सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी तथा सामाजिक न्याय के प्रणेता एवं दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर दोनों का दलितों के उत्थान के लिए अविस्मरणीय योगदान रहा है। यद्यपि दलित उत्थान के प्रश्न पर दोनों ही विचारकों के उद्देश्य लगभग समान थे किन्तु दलित समस्या के स्वरूप एवं कारणों की दृष्टि से दोनों में विचार वैभिन्य भी दृष्टिगोचर होता है। प्रस्तुत आलेख के अंतर्गत महात्मा गाँधी तथा डॉ. अम्बेडकर के विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

22.'' मध्यप्रदेश में नगरीकरण प्रवृत्ति 1951–2001(मालवा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)''–कु. महिमा राठौर,एम.फिल. भूगोल, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर (मध्य प्रदेश)

नगरीकरण को आर्थिक एवं भौगोलिक विकास का सूचक माना जाता है। वैज्ञानिक अविष्कारों, औद्योगिक प्रगति, जनसंख्या में वृद्धि, यातायात के साधनों के विपुल विस्तार आदि के फलस्वरूप सांप्रत काल में नगरों का आश्चर्यजनक विकास हुआ है। नगरीकरण मात्र एक जनांकिकीय प्रक्रिया नहीं है प्रत्युत इसमें सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी पक्ष भी सम्मिलित होते हैं। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में 1951 से 2001 तक नगरीकरण की उभरती प्रकृति, इसके कारक तथा तज्जनित समस्याओं को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

23.''झारखण्ड की प्रमुख जनजातियों की परम्परागत न्याय व्यवस्था ''—योगेश कुमार,शोध अध्येता, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखण्ड)।

छोटा नागपुर क्षेत्र में निवास करने वाली जनजातियों की अपनी परम्परागत व्यवस्था का इतिहास दो हजार वर्षों से अधिक समय का रहा है। आदिवासियों की न्याय व्यवस्था में फैसला पंचायती स्तर पर होता है जिसके अंतर्गत जनमत और सामुदायिक निर्णयों के आधार पर किसी भी मामले को सुलझाया जाता है। अतः आदिवासियों की परम्परागत न्याय व्यवस्था संसार की सबसे पुरानी लोकतांत्रिक व्यवस्था है। प्रस्तुत लेख झारखण्ड की प्रमुख जनजातियों की परम्परागत न्याय व्यवस्था को प्रकाशित करने का एक प्रयास है।

24.'' विलुप्त होती ताम्रशिल्पकला पर नगरीकरण का प्रभाव(अल्मोड़ा शहर के विशेष संदर्भ में)''—कु0 रचना टम्टा,शोध अध्येत्री समाजशास्त्र, कुमायूँ विश्वविद्यालय एस.एस.जे. परिसर अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

परम्परागत भारत में जाति प्रमुखतः व्यवसाय से ही चिन्हित होती थी। उत्तराखण्ड में शिल्प के आधार पर अपनी पहचान बनाने वाले लोगों को शिल्पकार कहा जाता था। किन्तु आज ये शिल्पी नगरीकरण एवं मशीनीकरण के फलस्वरूप अपनी पहचान के संकट से गुजर रहे हैं। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत उत्तराखण्ड के कुमायूँ मण्डल के अल्मोड़ा नगर में विलुप्त होती ताम्रशिल्पकला पर नगरीकरण के प्रभाव को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

25.'' कार्यरत महिलाओं की समाजार्थिक प्रस्थिति एवं समायोजन ''—डॉ0 कुसुमलता आर्य,समाजशास्त्र विभाग, कुमायूँ विश्वविद्यालय, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

स्वतंत्रता एवं समानता के संवैधानिक प्रावधान, जनसंख्या की अतिशय बढ़ती प्रवृति तथा आधुनिक भौतिकवादी एवं चुनौतीपूर्ण परिवेश में आत्मनिर्भरता की भावना एवं नूतन सोच ने महिलाओं को घर से बाहर निकलकर कार्य करने के अवसर प्रदान किये हैं। वर्तमान में वे विविध क्षेत्रों में कार्य करते हुए पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के साथ—साथ परिवार की आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही हैं किन्तु महिलाओं द्वारा इस दोहरी भूमिका से समायोजन एक चुनौती भरा कार्य है। प्रस्तुत लेख समायोजन की इसी स्थिति के अध्ययन का एक प्रयास रहा है।

26.'' विवाह संस्था के प्रति युवावर्ग का दृष्टिकोण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन ''—कंवलजीत कौर,शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र, एम.बी. स्नातकोत्तर कालेज, हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

मानव की विभिन्न प्राणीशास्त्रीय आवश्यकताओं में यौन संतुष्टि एक आधारभूत आवश्यकता है। विवाहरूपी संस्था प्रत्येक काल और प्रत्येक समाज में विद्यमान रही है। समय के साथ—साथ शिक्षा के प्रसार, पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव के फलस्वरूप विवाह के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन हुए हैं। प्रस्तुत लेख के अर्न्तगत विवाह के नवीन प्रतिमानों के सम्बन्ध में युवावर्ग के विचारों को जानने का प्रयास किया गया है।

27.'' महिला और वैश्वीकरण ''—सत्येन्द्र कुमार भारती, शोध अध्येता समाजशास्त्र, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)

उपभोक्तावादी साँस्कृतिक दौर में एक ओर यदि महिला की स्थिति मजबूत हुई है तो दूसरी ओर वह कमजोर भी हुई है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में महिला की इसी स्थिति को प्रकाशित करने के प्रयास पर प्रस्तुत लेख आधारित है।

28.'' मानवाधिकार एवं महिलाएँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''—ऊषा राणा,अतिथि व्याख्याता समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

मानवाधिकार का तात्पर्य तथा मान्यता है कि मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा एवं अधिकारों के संदर्भ में बराबर है। ये अधिकार किसी को प्रदान नहीं किए गये हैं अपितु पहले से ही प्राप्त है किंतु इनके संरक्षण का दायित्व सभी पर सभी के लिए समान रूप से हैं। प्रस्तुत आलेख का प्रधान उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति पर मानवाधिकारों के प्रावधानों के प्रभाव की जानकारी प्राप्त करने तथा महिलाओं के मानवाधिकारों की जागरूकता हेतु सुझाव देना रहा है।

29.'' महिला सशक्तीकरण में बैंक लिंकेज मॉडल की भूमिका ''—केशर सिंह डोडवे,शोध अध्येता, अर्थशास्त्र, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार के नीति—निर्देशों की मदद से फरवरी 1992 में नाबार्ड ने स्वयं सहायता समूहों और बैंकों के एक लिंकेज कार्यक्रम की शुरूआत की।ग्रामीण महिलाएँ वर्तमान परिवेश में स्वयं का उद्यम स्थापित कर रही हैं जो कि समाज एवं देश की प्रगति का सूचक है। बैंक लिंकेज मॉडल के अन्तर्गत विभिन्न बैंकों एवं गैर सरकारी संगठनों के द्वारा ऋण प्रदान किया जाता है। ऋण लेकर महिलाऐं स्वयं का उद्यम स्थापित करती हैं जिससे उनमें सशक्तीकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। प्रस्तुत लेख महिला सशक्तीकरण में बैंक लिकेंज माडल की भूमिका का मूल्यांकन करने की दिशा में एक प्रयास है।

30.''आदिवासी कल्याण में बैंकों की भूमिका''—प्रियंका सोनी, शोध अध्येत्री, बाबा साहेब अम्बेडकर, सामाजिक विज्ञान संस्थान, महू, इन्दौर(म.प्र.)

स्वतंत्रोपरांत भारत में आदिवासी कल्याण हेतु निरंतर अनेकानेक प्रयास किये जाते रहे हैं। उनके स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि एवं उद्योग के क्षेत्र में शासन द्वारा जहाँ अनेक योजनाएं कार्यान्वित की गई हैं वहीं बैंकिंग संस्थाओं के माध्यम से इनके कल्याण हेतु अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं। प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा आदिवासी कल्याण में बैंकों की भूमिका को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

31.''उच्च शिक्षा और छात्र राजनीति ''—डा0 रवि जोशी,राजनीतिशास्त्र विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड), अमित कुमार, शोध अध्येता, राजनीतिशास्त्र, एल.एस.एम. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)

आज छात्र राजनीति अपराधियों तथा लम्पट तत्वों का मंच बन गयी है तथा इससे परिसरों का शैक्षणिक महौल बिगड़ने के साथ ही कई बार कानून व्यवस्था के लिए भी खतरा उत्पन्न हो जाता है। आये दिन होने वाली छात्र हड़तालें तथा तालाबंदी भी उनके तर्क को पुष्ट करती हैं। लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि सिर्फ यही छात्र राजनीति की पूरी तस्वीर नहीं है। आज भी देश में स्वाधीनता आंदोलन की गौरवपूर्ण छात्र भागीदारी को याद किया जाता है, आज भी भगत सिंह को छात्र और युवा अपना आदर्श मानते हैं, जे0 पी0 आंदोलन की यादें आज भी लोगों के जेहन में जिंदा हैं, उत्तराखण्ड आंदोलन के दौर में भी छात्रों की उसमें अहम भागीदारी रही है। चाहे चिपको आंदोलन हो, नशा नहीं रोजगार दो आंदोलन हो या फिर प्रदेश में विश्वविद्यालय स्थापना का आंदोलन हो, छात्रों की उनमें प्रभावी प्रतिभागिता रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च शिक्षा के साथ छात्र राजनीति के महत्व और उनकी प्रतिभागिता का विश्लेषण किया गया है।

32.''पर्यटन के सन्दर्भ में उत्तराखण्ड आध्यात्मिक दर्शन का स्वरूप ''—कु0 लीला कन्याल, शोध अध्येत्री, दर्शनशास्त्र विभाग, हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर—गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

पर्यटन हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का एक विशिष्ट अंग रहा है और धार्मिक दृष्टिकोण से इसका अतिशय महत्व है। अद्वैत वेदान्त के संस्थापक शंकराचार्य ने संपूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधने हेतु चारों दिशाओं में चार धामों (उत्तर में बद्रीनाथ, पश्चिम में द्वारिका, पूर्व में जगन्नाथ पुरी तथा दक्षिण में रामेश्वरम्) की स्थापना की जिसमें भारतीय संस्कृति की छाप स्पष्टतः परिलक्षित होती है। इन तीर्थ स्थानों के दर्शनों से आध्यात्मिक सुख की अनुभूति होती है। उत्तराखण्ड में बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, हेमकुण्ड साहिब आदि प्रमुख धार्मिक स्थलों के अतिरिक्त पग—पग पर सैंकड़ों दर्शनीय मंदिर एवं तीर्थ स्थलों के अपार भंडार के संदर्भ में प्रस्तुत लेख उत्तराखण्ड को आध्यात्मिक दर्शन के स्वरूप के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

33. पुस्तक समीक्षा —पुस्तक : प्राचीन यूनान : इतिहास एवं संस्कृति, लेखक : प्रोफेसर उदय प्रकाश अरोड़ा, प्रोफेसर ग्रीक चेयरस्कूल ऑफ लैंग्विज लिटरेचर एण्ड कल्चरल स्टडीज, जे.एन.यू. (नई दिल्ली), समीक्षक—प्रोफेसर अतुल कुमार सिन्हा, अध्यक्ष प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालयबरेली (उ.प्र.)

34. पुस्तक समीक्षा—पुस्तक :—गोंड जनजाति में साँस्कृतिक परिवर्तन, लेखिक : डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह, रीडर समाजशास्त्र विभाग, मा.गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी, समीक्षक—प्रोफेसर ए.एल. श्रीवास्तव, भू.पू. अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, बी.एच.यू., वाराणसी (उ.प्र.)